अगस्त-2017

॥ओ३म्॥

मूल्य 10 रुपये

गुरुकुल आश्रम आमसेना की मासिक पत्रिका

कुलभूमि

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2017

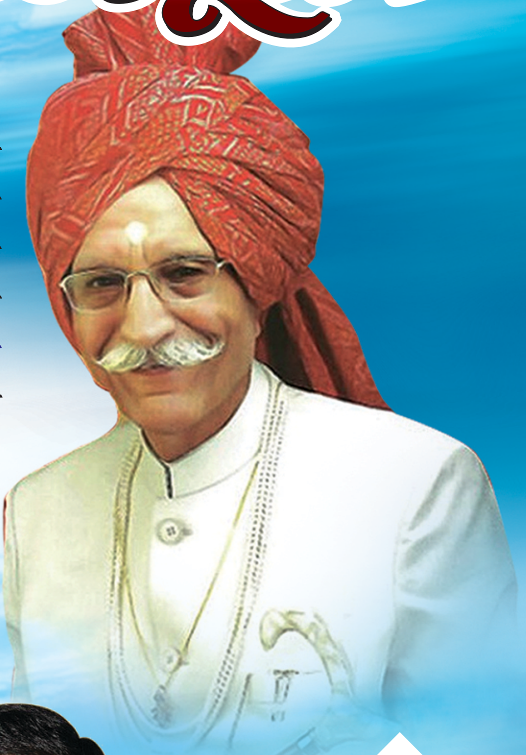

सारे संसार में आयुर्वेद एवं चिकित्सा का डंका बजाने वाले, अनेक औषधियों की खोज करने वाले, प्राणयाम द्वारा अनेक रोगों को स्वस्थ करने वाले योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज तथा उनके अनन्य सहयोगी आचार्य बालकृष्ण जी आर्य जनता को आशीर्वाद देने के लिए गुरुकुल के स्वर्ण जयंती महोत्सव पर पधार रहे हैं।

सारे संसार में शुद्ध मसालों का महत्व बढ़ाने वाले कुबेर दानी महाशय धर्मपाल जी भी गुरुकुल के स्वर्ण जयंती महोत्सव में पधार रहे हैं।

विशेष सहयोगी

स्वर्ण जंयती महोत्सव के व्यवस्था के लिए १ लाख रु. या इससे अधिक सहयोग देने वाले सहयोगी सज्जनों का गुरुकुल परिवार आभारी रहेगा। जो पुण्यात्माएं १ लाख रु. या उससे अधिक सहयोग करेंगे ऐसे उदार महानुभावों के चित्र गुरुकुल के ५० वर्षीय इतिहास में भी प्रकाशित किए जायेंगे। अब तक निम्न पुण्यात्माओं ने सहयोग किया है–

- ठाकुर विक्रम सिंह जी, दिल्ली .... **५ लाख रुपया।**
- गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक द्वय आचार्य वीरेन्द्र जी व आचार्य मंजीत जी द्वारा एकत्रित .... **५ लाख रुपया।**
- गुरुकुल के अनन्य सहयोगी आदर्श दम्पति श्रीमती माता कांता मेहता व श्री जितेन्द्र मोहन जी मेहता द्वारा गुरुकुल के विभिन्न प्रकल्पों हेतु सहयोग ....**५ लाख रुपया।**

श्रीमती माता कांता व श्री जितेन्द्र मोहन जी मेहता

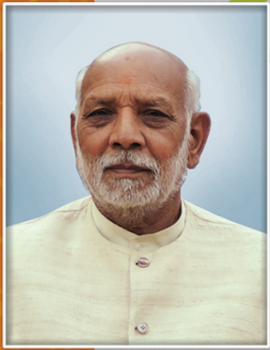

ठाकुर विक्रम सिंह जी

आचार्य मंजीत जी

आचार्य वीरेन्द्र जी

!! ओ३म् !!

कुलभूमिरियं वितरेज्जगते, सुमतिं विदुषामिहवेदविदाम्।
ऋषिभिश्चरितं महता तपसा, शुभं धर्मधिया सकलोन्नतिकृत।।

कुलभूमि

गुरुकुल आश्रम आमसेना का मासिक मुखपत्र

अगस्त 2017 वर्ष – 40, अंक – 08 वि.सं. – 2074
सृष्टि संवत् – 1, 96,08,53,118, दयानन्दाब्द – 193

प्रतिष्ठाता
श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

संरक्षिका एवं प्रधाना
माता परमेश्वरी देवी

कुलपति
श्री मिठाईलाल सिंह जी

संरक्षक
श्री डॉ. पूर्णसिंह जी डबास

परामर्श दाता
श्री आचार्य सोमदेव जी शास्त्री
श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी

प्रधान सम्पाद
श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सम्पादक
श्री डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी

सह सम्पादक
कोमल कुमार आर्य
ब्र. मनुदेव वाग्मी

आदरी सम्पादक
श्री शरच्चन्द्र जी शास्त्री
सुश्री आचार्या पुष्पा "वेदश्री"

सहयोगी
श्री जगदीश जी राय बंसल
श्री अवनी भूषण पुरंग जी
श्री राजेन्द्र जी धनखड़
श्री घनश्याम जी अग्रवाल
श्री जगदीश जी पसरीचा
श्री रोहित नरुला जी

व्यवस्थापक
ब्र. राकेश शास्त्री
ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

दक्षिण-पूर्व भारत को आर्यों के तीर्थस्थान, वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्य जगत को उच्चकोटि के विद्वान् एवं सेवक तैयार करने वाले महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना को अब स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस ५० वर्षिय अर्द्ध शताब्दी पर गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में २३, २४, २५ दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा। गुरुकुल का यह समारोह सारे आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद एवं नया उत्साह देने वाला हो। इस पवित्र भावना को लेकर महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गई है।

आशा है श्रद्धालु जनों का पूर्ण उत्साह पूर्वक सहयोग एवं आशीर्वाद इस कार्यक्रम को सफल करने को मिलेगा।

लेखों में दिये गये विचारों के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

-: प्रकाशक एवं मुद्रक :-

गुरुकुल आश्रम आमसेना

व्हाया – खरियार रोड, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766109
Web - *WWW.Vedicgurukulamsena.com*, मो.नं. 9437070541/615,
Email-*aumgurukul@rediffmail.com* *7873111213*

खाते का नाम : आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना SBI खरियार रोड

खाता संख्या : *11276777048* IFSC Code : SBIN*0007078*

गुरुकुल को दिया गया दान में 80G के अन्तर्गत आयकर मुक्त है ।

वेदोपदेश:

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। आचार्य कोमल कुमार

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृताम्।।

शब्दार्थ :- **त्र्यम्बकम्**- रक्षा करने वाले परमेश्वर की हम, **यजामहे**- उपासना करते हैं जो, **सुगन्धिं**- अपने उपासकों की कीर्ति को फैलाने वाला है, **पुष्टिवर्धनम्**- जो शरीर धन बल आदि को बढ़ानेवाला है, **उर्वारुकम्**- खरबूजे की तरह, **बन्धनात्**- बन्धन से, **मृत्योः**- मृत्यु के, **मुक्षीय**- मुक्त हो जाऊँ, **मा**- नहीं, **अमृतात्**- मोक्षानन्द से।

भावार्थ- यह एक प्रसिद्ध मंत्र है जिसका प्रतिदिन देश-विदेश में हजारों-लााखों व्यक्ति जप करते हैं। इसकी लोकप्रियता का कारण यह है कि इसमें मृत्युरुपी बन्धन (दु:ख) से छूटने की प्रार्थना की गयी है। सभी व्यक्ति जीवित रहना चाहते हैं। कोई भी मरना नहीं चाहता, यदि फिर भी मृत्यु आती है तो मनुष्य चाहता है कि मुझे पुनर्जन्म न मिले मैं मोक्ष को प्राप्त कर लूँ। मनुष्यों को दु:ख देने वाली घटनाओं की सूची में सबसे ऊपर प्रथम क्रम में मृत्यु शब्द लिखा हुआ है। मृत्यु का भय सर्वव्यापक है। मृत्य से बचने के लिए व्यक्ति कुछ भी इष्ट-अनिष्ट करने को सुसज्जित रहता है। यहाँ तक कि सर्वस्व तक को त्यागने को तैयार रहता है।

नीतिकारों ने भी लिख दिया है कि "आत्मार्थे पृथ्वीम् त्यजेत्" अर्थात् यदि पूरी पृथ्वी का साम्राज्य दे देने से जीवन बचता है तो दे देना चाहिए। जीवन सभी को प्यारा है। मनुष्य मृत्यु से इतना भयभीत क्यों है इस पर विचार करें तो कुछ कारण समझ में आता है।

प्रथम :- मनुष्य जीवन भर तक घोर पुरुषार्थ करके जो धन-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति आदि प्राप्त करता है और उनके प्रति राग बना हुआ होता है और उन सब बस्तुओं के प्रति स्व-स्वामीसम्बन्ध-अधिकार की भावना भी बनी होती है, ये सब छूटते हुए दिखाई देते हैं, जो कि सहनीय नहीं होते।

द्वितीय :- प्राय: मनुष्यों को आत्मा की नित्यता पर पूर्ण दृढ विश्वास नहीं होता, उन्हें ऐसा नहीं लगता है कि मेरा शरीर ही नष्ट होगा, आत्मा नहीं, आत्मा तो अजर-अमर है। मेरी आत्मा इस पुराने जीर्ण-शीर्ण शरीर को छोड़कर, ईश्वर की व्यवस्था से नये शरीर को धारण करेगी।

तृतीय :- मृत्यु के समय भय उत्पन्न होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि मनुष्य ने अपने जीवन काल में जो पाप, अधर्म, अन्याय आदि बुरे कर्म किये हैं उनका ईश्वर की ओर से न जाने कैसा, कब और कितना दण्ड मिलेगा, इस अनिश्चितता के कारण भी वह मृत्यु से भयभीत रहता है।

सम्पादकीय ...

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

गत् दो हजार वर्षों से देश में मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ। इतिहासकारों के अनुसार पहले जैन सम्प्रदाय के लोगों ने महावीर स्वामी आदि की मूर्तियां बनाकर उसकी पूजा प्रारम्भ की। फिर महावीर स्वामी के साथ कुछ अपने और महापुरुषों को जोड़कर तीर्थंकर बनाकर उनकी पूजा प्रारम्भ की।

इन जैन मूर्तियों को देखकर दूसरे हिन्दू पण्डितों ने अपने भक्तों को आकर्षित करने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्री कृष्ण आदि के साथ महादेव शिव, विष्णु, ब्रह्मा, आदि चौबीस अवतारों की कल्पना कर इनकी पूजा प्रारम्भ कर दी। इनकी प्रशस्ति में अनेक पुराण–उपपुराण भी बना दिये। शनैः – शनैः इन अवतारों के नाम से मन्दिर भी बन गये।

अब सुविधा प्रेमी साधारण जनता ने इसी मूर्तिपूजा को भगवान की भक्ति का सरल मार्ग मान लिया। कि मन्दिर में थोड़ा प्रसाद चढ़ाकर मूर्ति पूजा करके सब पापों से छुटकारा हो जाएगा।

इस प्रकार शनैः – शनैः ज्यो–ज्यो पाप बढ़ने लगे। या मूर्तियों को मानकर किसी संकल्पिक कार्य की सिद्धि हो जाती है। तब भी मंदिरों पर प्रसाद चढ़ाते दान पुण्य करते हैं। इस प्रकार शनैः – शनैः मन्दिरों में धन इकट्ठा होने लगी। बहुत से राजा महाराजा जमीदार भी अपनी ओर से मन्दिर बनाकर पूजारी रख देते। पुजारी को सीमित धन देकर शेष धन मन्दिर के नाम जमा हो जाता। उस धन से मूर्तियां भी सोना, चांदी धातु की बनने लगी। जिस स्थान पर मूर्ति रखी जाती। उसके आस–पास के सारा स्थान सोना, चांदी से ढक जाता। इस प्रकार अनेक मन्दिरों में अथाह सम्पत्ति इकट्ठी हो गई।

जब विदेशी यवन–मुगल आक्रमण करके आने लगे। उनको मन्दिरों में रखी हुई अथाह धन, सम्पत्ति का पता लगा, तो वे बार–बार आकर लुटने लगे। जब इन विदेशी लुटेरों का विरोध करने के लिए उस क्षेत्र के राजा अपनी सेना लेकर आए तो पूजारियों ने राजा को कह दिया कि भगवान शिव जी रक्षा आप करेगें। इन दुष्टों को मारकर भगा देंगें।

परन्तु न शिव जी आये और न गण आए। मना करने पर भी मन्दिर को तो लूटे ही उन मूर्ख पण्डितों को भी मौत के घाट उतार दिया।

ये विदेशी लुटेरे इन पुजारियों को छल कपट से सामदाम से अपने साथ मिला लेते। रक्षकों को

लड़ाई करने वालों को कोई न कोई अनिष्ट का भय दिखाकर क्षत्रियों को लड़ाई करने से रोक देते। श्रद्धालु जनता, क्षत्रिय आदि। उन स्वार्थी पण्डितों के बहकावे में आ जाते। इसलिए इस मूर्ति पूजा ने मन्दिरों के अथाह सम्पत्ति को तो लुटाया ही पुजारियों को भी मार डाला और इनकी स्त्रियों को भोग्या बनाकर अपने साथ ले गये। ऐसी घटनाए बार-बार होती रहीं।

इस प्रकार हमारे देश में वीरता एवं क्षत्रिय भाव का अभाव होता गया। मूर्ति पूजा एवं अन्धविश्वास बढ़ता गया।

उन्नीसवीं शताब्दि में महर्षि दयानन्द जी ने आकर देश को जगाने मूर्तिपूजा एवं अंधविश्वास का तीव्र खण्डन किया। ऋषि दयानन्द के पीछे उनके उत्तराधिकारियों ने भी मूर्तिपूजा के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन चलाया। इससे देश में नई जागृति आई? सैकड़ों आर्य समाज स्थापना हुई, एवं सर्वत्र निराकार ईश्वर की पूजा होने लगी। देश के समझदार लोगों ने सारे देश को एकता के सूत्र में बांधने का यत्न किया। क्योंकि इन मन्दिरों में बैठाए गए। भिन्न-भिन्न भगवानों को मानने वाले आपस में ही लड़ते थे।

आर्य समाज के प्रचारकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण बनाया स्वाधीनता के मांग करने वाले आर्य समाजी ही थे।

परन्तु आर्य समाज के कुछ नेता अपने स्वार्थवाद में फंसकर इस मूर्ति पूजा में से भी समझौता कर लेते थे। वैसे भी देश की साधारण जनता भगवान की पूजा का सरल मार्ग अपना लेती है।

स्वाधीनता के आन्दोलन में कांग्रेस का साथ देने वाले अधिकतर आर्य समाजी ही थे। परन्तु महात्मा गांधी ने त्यागी, तपस्वी आर्य नेताओं को पीछे कर दिया महात्मा गांधी ने भी साधारण जनता को अपने साथ जोड़ने मूर्ति पूजा को ही अपनाया। परन्तु महात्मा गांधी ने खुलकर मूर्ति पूजा का समर्थन नहीं किया। नेहरु जी भी मूर्ति पूजा को अधिक नहीं मानते थे। अत: कांग्रेस के शासन काल में मूर्ति पूजा को प्रोत्साहन नहीं मिला।

परन्तु राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ के संचालक गुरु जी स्वामी विवेकानन्द जी के अंध भक्त थे। स्वामी विवेकानन्द जी मूर्ति पूजा का खुला समर्थन करते थे, अत: गुरु जी तथा उनके उत्तराधिकारी मूर्तिपूजा को महत्व देते रहे। इसलिये राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ भी मन्दिरों एवं मूर्ति पूजा को मान्यता

देता है परन्तु ये संघ के नेता खुलकर मूर्तिपूजा का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि वे आर्य समाज का विरोध नहीं करना चाहते थे।

क्योंकि कांग्रेस के तरह के संघ से कई आर्य सज्जन जुड़े हुए है।

जब मोदी जी प्रधान मंत्री बने तो उन्होंने खुले रुप में मूर्ति पूजा का समर्थन कर दिया। वे देश विदेश में जहाँ भी जाते है पहले वहां के मन्दिरों में जरुर जाते है। इससे मूर्तिपूजा को खुला समर्थन मिल रहा है। नये-नये मन्दिर बनते जा रहे हैं। मन्दिरों में पर्याप्त मात्रा में धन इकट्ठा हो रहा है। बहुत से स्वार्थियों ने नए-नए मन्दिर बनाकर उसमें चढ़े धन से मौज मस्ती करना अपना धंधा बना लिया, इन मन्दिरों की पूजा से ऊंच नीच तथा छूआछूत का भाव बढ़ता है। क्योंकि प्रत्येक मन्दिर का पूजारी तथा संचालक सीमित मात्रा में ही लोगों को जोड़ना चाहता है। जबकि नये-नये मन्दिरों से फूट बढ़ रही है। स्वार्थ एवं व्यसन बढ रहे है। इन नेताओं को देखकर प्राय: सभी टी.वी. चैनल भी झूठी सच्ची घटनाए कहानिया बनाकर लोगों को बहकाते है। इन मन्दिरों से ही पशुबलि की भावना बढ़ती है। अत: जो नेता या टी.वी. चैनल वाले वास्तव में देश का हित करना चाहते है। वे नई-नई कल्पित कहानियां दिखाकर जनता को भ्रमित न करें। इन मन्दिरों की तथा भगवानों की जो महत्ता बतलाई जाती है वे सब झूठी है। आज तक ऐसी घटना एक भी सत्यसिद्ध नहीं हुई।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नया प्रवेश प्रारम्भ

अब स्कूलों, कॉलेजों में तीव्रगति से चरित्रहीनता बढ़ रही है। छोटे-छोटे बालक भी वासना के जाल में फंसते जा रहे हैं। अत: इन कुसंस्कारों से देश के भावी बालक-बालिकाओं के चरित्र की रक्षा गुरुकुलों की आर्ष शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

अत: जो सज्जन अपने होनहार पुत्र-पुत्रियों को चरित्रवान्, विद्वान्, बलवान, तेजस्वी बनाना चाहते हैं, जो वृद्धावस्था में अपना सहारा चाहते हैं तो गुरुकुल आश्रम आमसेना, आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना, आर्ष ज्योति गुरुकुल कोसरंगी (छ.ग.), परममित्र आर्ष गुरुकुल गेरवानी, रायगढ़ (छ.ग.) आदि में प्रवेश करा सकते हैं। गुरुकुल में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के आर्ष पाठ्यक्रम के साथ छ.ग. संस्कृत मण्डल तथा पुरी विश्वविद्यालय से भी परिक्षायें दिलायी जाती है। पढ़ाई के साथ औषध निर्माण, पैकिंग, कम्प्यूटर, कृषि, गौसेवा की भी क्रियात्मक शिक्षा स्वावलम्बी बनाने के लिये दी जाती है।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9437070541/615, 8280283034, 7873111213

ऋषि उवाच

परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरेव्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों के करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित न्याय धर्म अनुसार ही करें। इत्यादि साधनों से मुक्ति और इन से विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बंध होता है।

वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

भगवान से लौ लगाते रहेंगे

सुखलाल आर्य मुसाफिर

जो भगवान से लौ लगाते रहेंगे।
वो जो मुंह से मांगेंगे पाते रहेंगे।
सुनेगा न ईश्वर भी फरियाद उनकी।
जो बाते ही बाते बनाते रहेंगे।।
न होगी अगर हिन्दुओं में एकता।
लात सदा गैरों की खाते रहेंगे।।
लगाया न छाती अछूतों को हमने।
तो ये लाल जाति के जाते रहेंगे।।
अहद कर लिया है कि जब तक रहेंगे।
वतन से मोहब्बत निभाते रहेंगे।।
उठायेंगे उनको जो गिर चुके हैं।
जो रुठे हैं उनको मनाते रहेंगे।।
बला से कफस में हो या आशियां मे।
चमन के लिये चह-चहाते रहेंगे।।
न पहुंचेगें मंजिल पै जब तक 'मुसाफिर'।
कदम हर समय हम बढ़ाते रहेंगे।।
गुलाम से आजाद होकर रहेंगे।
जो नाशाद हैं वो शाद होकर रहेंगे।।
जमाने के उस्ताद थे हम कभी।
जमाने के उस्ताद हम होकर रहेंगे।।
'मुसाफिर' वतन के लिये हम मर गये।
तो जिन्दा सदा याद रहेंगे।।

शास्त्र चर्चा

कु. निशा आर्या

पापं कुर्वन् पापकीर्तिः पापमेवाश्नुते फलम्।
पुण्यं कुर्वन पुण्यकीर्तिः पुण्य मत्यन्तमश्नुते।।

अर्थात् :- जो व्यक्ति पाप कर्म करता है, वह उस पाप के फल को ही प्राप्त करता है। और श्रेष्ठ एवं पुण्य कर्म करने वाला यश और पुण्य फल ही प्राप्त करते हैं।

तस्मात् पापं न कुर्वीत पुरुषः शंसितव्रतः।
पापं प्रज्ञां नाशयति क्रियमाणं पुनः पुनः।।

अर्थात् :- अतः जो उत्तम मनुष्य होते हैं वे पाप कर्म कभी नहीं करते, क्योंकि बार-बार पाप कर्म करने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

नष्ट प्रज्ञः पापमेव नित्यमारभते नरः।
पुण्यं प्रज्ञां वर्धयति क्रियमाणं पुनः पुनः।।

अर्थात् :- बुद्धि नष्ट हो जाने पर पाप कार्य ही प्रिय लगने लगता है और व्यक्ति सदा के लिए पाप कर्मी बन जाता है। इसके ठीक विपरीत बार-बार पुण्य कर्म करने से व्यक्ति का विवेक जागृत होता है। बढ़े हुए विवेक वाला व्यक्ति शुभकर्मों की ओर प्रवृत्त होता है।

वृद्धप्रज्ञं पुण्यमेव नित्यमारभते नरः।
पुण्यं कुर्वन् पुण्यकीर्तिः पुण्यं स्थानं स्म गच्छति।।

अर्थात् :- पुण्य कर्म करने वाला इस जन्म में तो यशस्वी होता है, दूसरे जन्म में भी संस्कार वश उत्तम योनि को प्राप्त करता है। इसलिए मनुष्य को बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तम कार्य करते रहना चाहिये।

ओ३म्
सितोपलादि चूर्ण
यह चूर्ण खांसी, जुकाम, क्षय, पुराने ज्वर एवं पाचन की गड़बड़ी में बहुत उपयोगी है।
सेवन विधि :
2 से 4 ग्राम शहद या घी से प्रयोग करें।
Mfg. Lice. No.: O.R.78 Ayur.
Net. Wt. :
Batch. No. :
Mfg. Date :
M.R.P. :
प्रा.भा.वि. सभा गुरुकुल आमसेना, नवापारा (ओडिशा)

ओ३म्
मातृकल्याण वटी
स्त्रियों के श्वेत एवं रक्त प्रदर, अनियमित मासिक स्राव, कटीशूल, गर्भाशय की कमजोरी, हाथ पांव की जलन से उपयोगी है।
Mfg. Lice. No. : O.R.78 Ayur.
Net. Wt. :
Batch. No. :
Mfg. Date :
M.R.P. :
प्रा.भा.वि. सभा गुरुकुल आमसेना, नवापारा (ओडिशा)

आचार्य मनुदेव वाग्मी

अच्छी नींद लेकर रहें स्वास्थ्य।

आयुर्वेद में ऋषि मुनियों ने स्वस्थ रहने के तीन आधार लिखा है, आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य यदि किसी व्यक्ति के ये तीनों ठीक रहते है, वही स्वस्थ एवं सुखी रहते है आजकल अधिकतर व्यक्तियों के ये तीन चीजे ही बिगड़ी हुई है। जैसे भोजन करने का कोई समय नहीं कोई नियम नहीं। जब जो मिला वही खा लिया इससे पाचन तंत्र अस्त-व्यस्त हो जाता है।

स्वस्थ का दूसरा आधार निद्रा है अब इस लेख में निद्रा पर ही कुछ विचार करें, क्योंकि इस समय ६० प्रतिशत व्यक्ति निद्रा रोग से परेशान है। ठीक समय पर अच्छी नींद न आने से जीना भारी हो जाता है।

अत: अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि नींद से शरीर के सभी तंत्रों को लाभ पहुंचाता है।

शरीर का भार औसत बना रहता है और मोटापे से बचाव होता है।

इक्यून तंत्र शक्तिशाली हो जाता है जिससे बीमारियों की चपेट में आने की आशंका कम हो जाती है।

दर्द में आराम, अनुसंधानों में यह बात सामने आई है कि नींद दर्द में दवा का काम करती है इसलिए कई दर्द निवारक दवाईयों में थोड़ी मात्रा में अच्छी नींद आने की दवा भी होती है। पर्याप्त नींद लेने पर मूड बेहतर रहता है, नींद की कमी से भावनात्मक संतुलन प्रभावित होता है। पर्याप्त नींद लेने वालों की ध्यान केन्द्रित और निर्णय लेने की क्षमता और तर्क शक्ति बेहतर होती है।

जो लोग पूरी नींद लेते है वे उन लोगों की तुलना में अधिक आकर्षक और स्वस्थ दिखते है, जो पर्याप्त नींद नहीं लेते है।

अनिद्रा कई कारणों से हो सकती है, जैसे डिप्रेशन, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, डाइबिटिज, तनाव, चिंता, थकान, असमय बुढ़ापा, सौंदर्य समस्या जोड़ों में रोग, एसिडिटी, मोटापा और हार्मोनल समस्याएं। इसलिए अनिद्रा का उपचार अति आवश्यक है, इसलिए आइये हम अनिद्रा को गुड नाइट

कहें इसके लिये आप मेरी निम्न सलाहों का अनुसरण करें– सोने का एक निश्चित समय बनाएं, साथ ही उठने का भी। रात में जल्दी सोएं तथा सुबह जल्दी उठ जाएं। सुबह जल्दी ही उठे चाहे रात में अच्छी नींद न आई हों।

दिन में न सोएं बिस्तरों पर सोने के अलावा अन्य समय न बिताएं क्योंकि ऐसा करने से अनिद्रा की समस्या बढ़ती है।

दिन में शारीरिक श्रम करें दौड़ना, चलना, खेलना, घर के कार्य करना, कसरत करना आदि। शरीर को थका देने से अच्छा उपचार अनिद्रा का कुछ भी नहीं है।

शाम को भोजन जल्दी करें।

देर रात तक टी.वी., कम्प्यूटर, लेपटॉप एवं मोबाईल पर कार्य न करें।

रात्रि में काफी, चाय एवं एल्कोहल न लें क्योंकि यह नींद में व्यवधान डालते है।

शाम को अधिक तरल पदार्थ न पीयें क्योंकि यूरीनरी ब्लेडर भरने से आपकी नींद बांधित होगी।

सिर पर किसी शान्ति दायक शीतल तैल की मालिश करें।, इससे इन्द्रियों को शान्ति मिलती है जिससे हमें नींद आने लगती है।

लिवेंडर ऑईल की कुछ बून्दे तकिये पर छिडक दें जिससे आपको गहरी नींद आएगी।

सोते समय कानों में ईअर प्लग्स लगाकर सोएं जिससे आसपास होने वाली आवाजों से आपको नींद बाधित नहीं होगी।

उपरोक्त बातों का आपा अनुसरण करें और अपनी अनिद्रा की समस्या को गुड नाईट कहकर आराम से सो जाएं। बीमार रहना भूल जाईये, सोचिए और स्वस्थ रहिए।

उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें:-

01. सत्यार्थ प्रकाश	- 40.00	07. विष चिकित्सा	- 30. 00
02. खिलते फूल	- 8.00	08. कन्या और ब्रह्मचर्य	- 05.00
03. गीत कुञ्ज	- 10.00	09. ईश्वर कहां है ?	- 10.00
04. सच्चा सुखी कौन	- 10.00	10. सच्चा धर्म	- 05.00
05. विचित्र ब्रह्मचारी	- 05.00	11. दैनिक उपासना	- 10.00
06. वैदिकधर्म प्रश्नोत्तरी	- 15.00	12. योगासन एवं प्राणायाम	- 25.00

बाल संसार

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

वर्षा काल होने से इन दिनों स्वामी चैतन्य मुनि जी अपने आश्रम में ही स्वाध्याय साधना में व्यस्त थे अत: सायंकाल जब बाल संसार के विशेष सदस्य युवक देवसुमन ने स्वामी जी का अभिवादन करते हुए करबद्ध होकर कहा, कि– गुरुदेव आजकल पिछले कुछ समय से पाकिस्तान सरकार की प्रेरणा से वहीं से शिक्षित आतंकवादी तथा आतंकवादियों की वेशभूषा पहनकर वहाँ के सैनिक भी लगातार हमारे सेना पर प्रहार कर रहे हैं। फल स्वरुप वर्ष में हमारे देश के हजारों सैनिक मारे जाते हैं। भारत सरकार इसके स्थायी उपाय क्यों नहीं कर रही है?

प्रिय युवकों देवसुमन जी ने एक बहुत ही सामयिक आवश्यक बात पूछकर अपने विचार उपस्थित किए। प्रत्येक देशभक्त युवक के ऐसे ही विचार और भावना होनी चाहिए। तभी हमारा देश अपना प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकेगा। जहाँ तक भारत सरकार का सम्बन्ध देश की रक्षा के विषय में है उसके लिए मोदी सरकार सभी आवश्यक कदम उठा रही हैं। सम्भवत: आपको ज्ञात नहीं होगा, कि हमारे देश के एक सैनिक के बलिदान के पीछे पाकिस्तान के दो–तीन सैनिकों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। पाकिस्तान की जनता में भी इसी प्रकार हाहाकार मचा हुआ है। पाकिस्तान की जनता भी वहाँ की सरकार को निरन्तर निन्दा कर रही है।

सौभाग्यवश हमारे देश में तो जीवन यापन उपयोगी जीवन चलाने के लिए आवश्यक साधन प्राय: सारे जनता को मिल रहे है। इस देश में जो लोग भूखे या निर्धन है वे परिश्रम नहीं करते, अपितु अनेक प्रकार केकुव्यसनों में भी फंसे हुए हैं। विशेषकर ऐसे लोग दूसरों के भरोसे ही जीना चाहते हैं। वे अपनी आय से अधिक मद्यादि नशों का प्रयोग (शराब आदि) के कुव्यसनों से पड़े रहते हैं। ये दुर्व्यसन करके वर्बाद हो जाते हैं। अज्ञानवश अपनी सन्तानों को भी व्यसनों में फंसा देते हैं। ऐसे भाग्यहीन व्यक्तियों का उद्देश्य होता है कि जैसे बने सरकार से या किसी धनवान् व्यक्ति से कर्जा लेकर मौज मनाये '**ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्**' यह उनकी आन्तरिक भावना होती है।

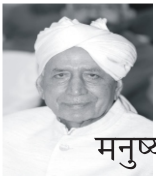

मित्र उवाच

मनुष्य को कोई भी कार्य करने से पहले उसे कार्य के विषय में शान्त हृदय से अच्छी प्रकार विचार करना चाहिए, कि यह कार्य समाज के लिए, परिवार के लिए, उपयोगी है या नहीं। यदि कोई कार्य करन से पहले किसी प्रकार का भय शंका आदि हो तो उस कार्य को नहीं करना चाहिए।

चौ. मित्रसेन जी आर्य

दुर्भाग्यवश आज ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है, इसलिए सरकार के सामने भी ईमानदारी से कार्य करने वाले अच्छे चरित्रवान् व्यक्ति सरकार का संचालन करने के लिए ईमानदारी पूर्वक देश का कार्य करने वाले व्यक्ति बहुत कम ही मिलते हैं। विश्वसनीय कार्यकर्ता बहुत कम मिलते हैं। इसलिए बड़े-बड़े कारखानों में और सरकारी विभागों से अनेक पद खाली पडे हैं। यदि किसी चरित्रहीन नशा करने वाले व्यक्ति को अधिकारी बना दिया जाता है तो वह देश के रहस्यों को, गोपनीय सूचनों को बेच देता है। पकड़े जाने पर जेल में सड़ते हैं। इसलिए भारत सरकार बड़ी सावधानी से देश की रक्षा करने का यत्न कर रही है। चीन से रक्षा कर रही है। पाकिस्तान को इट का जबाब पत्थर से दे रही है। पाकिस्तानी जनता के साथ वहाँ के सैनिक भी आक्रमण से ड़रकर पीछे भाग जाते हैं। कुछ सिरफिरे लोभ लालच में पड़े मनुष्य ही पाकिस्तान के दबाव में आकर मृत्यु के लिए आगे आते हैं। उनमें से अनेक मारे भी जाते हैं। पाकिस्तान ही नहीं अब चीन को भी हमारे सैनिकों ने पीछे हटने के लिए विवश किया।

जब काग्रेंस सरकार थी उस समय हमारे वीर सैनिकों की हत्या हो जाती थी। उस हत्या का उत्तर काग्रेंस सरकार कुछ नहीं दे सकी तथा चीन का दबाब और भय बना रहता था। परन्तु मोदी जी के तेज और प्रभाव से पाकिस्तान और चीन दोनों ही अन्दर से भयभीत हो गये हैं क्योंकि हमारे देश के सैनिक साहसी एवं वीर होते हैं। सेनाध्यक्ष सहित सभी अधिकारी भी साहसी और सूझबूझ के धनी हैं। अत: आप लोग लगकर देश में उत्साह बनायें।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में स्नातक परिचय

आचार्य सुदर्शनदेव 'व्रती' :- उड़ीसा प्रदेश के महानगर ब्रह्मपुर के निकटस्थ जगदलपुर नामक गांव में स्वनामधन्य श्रीयुत के कृष्णमूर्ति पात्र वा माता श्रीमती लक्ष्मीप्रिया के पवित्र कोख से ३०-७-७६ को आपका जन्म हुआ। माता-पिता अत्यन्त श्रद्धालु, धार्मिक, सात्विक विचारधारा से अभिभूत हैं। पूरा परिवार राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। पिता ने विद्वान् और राष्ट्रभक्त बनाने के उद्देश्य से ६-७-७८ को प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त गुरुकुल आश्रम आमसेना में प्रवेश कराया। आपने शास्त्री और दर्शनाचार्य विधिवत् गुरुचरणों में रहकर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आप छात्र जीवन से ही अत्यन्त सौम्य, उदार, नम्र और प्रतिभाशाली रहे हैं। आप ओजस्वी वक्ता, विद्वान् लेखक और व्यवहार पटु हैं। आपने आचार्य जी की प्रेरणा पर स्वतः जीवन का उद्देश्य जानकर १८ मार्च १९९९ को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर जीवन को गौरवान्वित किया है। अब आपने अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार, नई गुरुकुल हरिपुर की स्थापना की है। उसका संचालन में अपना जीवन लगा रहे तथा सारे उड़ीसा में घूम-घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार भी कर रहे है।

आचार्य सत्यप्रिय सामश्रवा :- आपका जन्म उड़ीसा बरगढ़ जिले के एक अनुन्न इच्छापुर गांव में पिता श्री प्रेमानन्द साहू व माता श्रीमती मिथिला देवी के पवित्र गृहवेदी पर १ जुलाई १९७७ को हुआ। माता-पिता सरल, सात्विक एवं उदार सज्जन हैं। यही कारण है कि गुरुकुल की ख्यति सुनकर २६ नवम्बर को गुरुकुल में आठवीं में आपका प्रवेश करा दिया। आप प्रारम्भ से ही कुशाग्रबुद्धि, कर्मकुशल, आस्थावान छात्र रहे हैं। गुरुकुलीय जीवन व्यतीत कर आपने आर्ष परम्परा का कुशल निर्वहन किया है। आपने ऋषिप्रणीत आष्टाध्यायी, धातुपाठ और सामवेद को भी कण्ठस्थ किया है। आपने शास्त्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के उपरान्त व्याकरणार्च कर दर्शनाचार्य भी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से की है।

क्रमशः

एक आर्य युवक की अरब देशों की रोमांचकारी यात्रा

क्रमागत.....

मक्का के पास पहुंचकर सुलतान का पड़ाव पड़ गया। रात भर वहीं बिता कर दूसरे दिन सवेरे सारे काफिले ने एहराम, दो धोतियाँ होती है, जो बिना सिली होती हैं, एक बांधी जाती है, दूसरी ओढी जाती है। सिर और पैर खुले रखे जाते है। कितनी ही जाडा पड़ता हो, सिर पर ढंके नहीं जा सकते। कोई ढंकता है, तो उसे दण्ड भुगतना पड़ता है, जो 'कफारह' कहलाता है। एहराम की हालत में कोई व्यक्ति किसी जीव को, चाहे सिर की जूं ही क्यों न हो, नहीं मार सकता। बिना एहराम बांधे मक्का की सीमा में प्रवेश करना धर्म-विरुद्ध माना जाता है। भारतीय मुसलमानों को, जो जहाज से मक्का को जाते हैं, लिमलिम पहाड़ी से जो यमन में है। जहाज में बैठ-ही-बैठे एहराम बांधना पड़ता है। तब ये आगे बढ़ते हैं।

सवेरे मोटर चली। रुचिराम जी एहराम बांधकर मोटर में जा बैठे और दोपहर होते-होते मक्का जा पहुंचे। वे जब बेतल्लाह जिसे खानाकावा (खुदा का घर) भी कहते है, पहुंचे तो मोटर से उतर पड़े और थोड़ा-सा चलकर मक्का नगर में पहुंच गये।

रुचिराम जी को मक्का में भारत के सबसे अधिक मुसलमान हाजी मिले। इसके बाद जावा के मुसलमानों का नम्बर था। जादा से इस कारण से बहुत से मुसलमान जाते थे कि, हज किये बिना वहाँ किसी की शादी ही नहीं होती।

मक्का में पच्चीस दिन ठहर कर रुचिराम इब्न-सऊद के साथ मोटर में बैठकर जबल तायक चले गये, जो शिमला-मसूरी की तरह एक ठण्डा स्थान है। मक्का में उस वक्त बड़ी गर्मी पड़ रही थी। तायफ फलों की अच्छी मण्डी भी है। तायफ में एक महीना ठहर कर, फिर इब्न-साऊद से विदा लेकर रुचिराम जी पैदल चल पड़े और 'हिजबुल्लाह' धर्म का प्रचार करते हुए रगदान पहंचे वहाँ जो अरब बसे हुए हैं, वे अपने रसोई-घर को गाय के गोबर से लीपते हैं और सिर पर गाय के खुर के बराबर चोटी रखते हैं। सम्भव है, आज के ये अरब पहले कभी हिन्दू रहे हों।

क्रमशः

नारी और यज्ञ

कु. कान्ता आर्या

नारी शब्द नृ धातु से बना है। व्याकरण के नियमानुसार अञ् एवं डी.न् प्रत्यय तथा वृद्धि होकर नारी बना। नारी को सम्बन्ध भेद से वा गुण भेद से अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे बेटी, कन्या, माँ, बहिन, पत्नी शिक्षिका। बेटी के रुप में यह हृदय की ममता का एक अंश है। बहिन के रुप में स्नेह बंधन की एक कड़ी है। पत्नी के रुप में अर्धांगिनी, सहधर्मिणी और एक सच्चे मित्र की तरह सहयोगिनी है। सन्तान को योग्यता प्रदान करती है तो एक शिक्षक गुरु का पूरा कर्त्तव्य निभाती है। बालिका के रुप में इसे देवी मानकर पूजा की जाती है। स्वामी दयानन्द जी भी एक नग्न बालिका को देखकर नमस्ते करते हुए सिर झुकाते हैं। वहां उनका भावना रहा है कि मानव निर्माण करने एवं पालन करने से वह पूजनीया है।

नारी जननी है, प्रथम गुरु है। सृजन एवं निर्माण नारी का गुण है। अतः ''**माता निर्माता भवति**'' कहा है। मूलतः पुरुष नारी की छत्रछाया में ही अपना सच्चा विकास कर सकता है। नारी में यदि निम्न गुण हो तो उसकी शोभा व महत्ता देवियों में गिनी जाती है, जैसे-प्रियवादिनी, ममतामयी, क्रोधरहित, परिश्रमी, सेवाभाविनी, त्यागमयी, समदर्शी, शूरवीर, पुत्रों को जन्म देने वाली हो। नारी का जीवन सेवा त्याग व ममता का अक्षय भंडार है।

स्वामी दयानन्द जी सरस्वती जो नारी के अधिकार पर बल देते हुए उपदेश मंजरी के तृतीय व्याख्यान में कहते हैं- पूर्वकाल में स्त्रियाँ उत्कृष्ट रीति से पढ़ती थीं। आर्यों के इतिहास की ओर देखें तो स्त्रियां आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करती थीं। साधारण स्त्रियों के भी उपनयन और गुरुगृह में प्रविष्ट संस्कार होते थे। इतिहास साक्षी है कि- गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी कात्यायनी, सीतादि स्त्रियां भी बड़े - बड़े ऋषि मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थीं।

मुस्लिम काल आया तो नारी जाति को यंत्रणा और अत्याचार का शिकार बनना पड़ा। पढ़ने-पढ़ाने की तो बात दूर रही, नारी को भोग विलास की सामग्री समझकर इसे पर्दे में बंद कर दिया गया। नारी जाति की शिक्षा जगत् में इतनी अधिक उपेक्षा की गयी, कि कुछ मतावलम्बियों ने स्त्रियों के

पढ़ने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगा दिया।

मध्यकालीन साहित्य में नारी के यज्ञाधिकार सम्बन्ध में अधिकतर विरोधी विचार मिलते हैं। इस विषय में वेद की स्थिति स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। वेद में नारी को समान अधिकार ही नहीं अपितु इसे पूज्या की उपाधि से विभूषित किया गया है। नारी और यज्ञ के पक्ष में प्रथम उन वैदिक प्रमाण मिलते हैं जिनमें सायण, उव्वट एवं महीधर भी नारी का यज्ञ में अधिकार वर्णित मानते हैं।

इसलिए किसी कवि ने कहा है–

जबरन जिसे गुम कर दिया नैपथ्य मे।
होना जिसे यज्ञ वेदि पर वह किरदार है नारी।
डर है अधिकारों को छिनने में जंग न छिड़ जाए।
इस पार पुरुष है तो उस पार है नारी।

गुरुकुल आश्रम न्यास के वरिष्ठ उपप्रधान

श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र जी आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी ओर से दो लाख रुपया तथा आर्य समाज रायपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद की ओर से एक लाख रुपया का सहयोग भिजवाया है। गुरुकुल परिवार इन सब दान–दाताओं का हार्दिक आभारी है। आशा है आर्य जनता के उदारता पूर्ण सहायता से गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव आशातीत रुप से सफल होगा।

निवेदक

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आश्रम आमसेना

कालो अश्वो वहति

– सुश्री पुष्पा वेदश्री

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरोभूरिरेताः।

तमा रोहन्ति कवयोविपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।। अथर्व.१९/५३/१

शब्दार्थ :– (**सप्तरश्मिः**) सात रश्मियों वाला, (**सहस्राक्षोः**) हजारो धुरो से युक्त रथ में जुता हुआ, (**भूरिरेताः**) बहुत अधिक बलशाली, (**अजरः**) कभी बूढ़ा न होने वाला सदैव युवा यह, (**कालः अश्वः**) काल रुपी घोड़ा, (**वहति**) इस संसार रथ को खींचे जा रहा है। (**तम् विपश्चितः कवयः आरोहन्ति**) उस पर विद्वान् और क्रान्तदर्शी लोग ही सवारी करने में सफल होते हैं (**विश्वा भुवनानि तस्य चक्राः**) ये सारे लोक–लोकान्तर उसके चक्र अर्थात् नियम से अपनी कक्षाओं में घूम रहे है, अतः इन्हें काल रथ के चक्र कहा है।

समय का गति विचित्र है। प्रतिदिन सूर्योदय और सूर्यास्त हो रहा है। मास ऋतु उत्तरायण, दक्षिणायन, संवत्सर क्रमशः आ जा रहे है। दिनभर कार्यों में व्यस्त मानव को कब अस्त हुआ, इसका भी ज्ञान नही रहता। किसी का जन्म, कष्ट, बुढ़ापा और मृत्यु को देखकर भी लोग सत्रस्त नहीं होते ऐसे लोगों के विषय में भर्तृहरि जी कहते है :–

''पीत्वा मोहमयी प्रमाद मदिरा मुन्मत्तभूतं जगत्।''

ऐसा लगता है कि मोहमयी प्रमाद–रुप मदिरा को पीकर यह सारा संसार उन्मत हो गया है।

समय का हम चित्र बनाएं तो उसका मुख बालों से ढ़का होन के कारण उसे सामने से देखा नहीं जा सकता। इसके दो पंख लगे है जिनसे यह बड़ी तेजी से उड़ा जा रहा है। इसके पीछे से बाल गंजे है इस कारण इसे पीछे से पकड़ा नहीं जा सकता। इसे तो वही पकड़ सकता है जो पहले से ही सावधान हो और उसे पहचान कर आगे से ही पकड़ ले।

वक्त को समझा नहीं जिसने उसे मिटना पड़ा हे चाहे कितनी ही बड़ी हो हर नदी की राह से चट्टान को हटना पड़ा हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद् में इस संसार को घोड़े की उपमा दी है जो देवो और साधु जनों को हय

अर्थात् सांसारिक पदार्थों का त्यागपूर्वक भोग कराता हुआ परमात्मा तक पहुचा देता है।

जीवन पथ में आगे बढ़ने के लिये समय के साथ चलना बहुत आवश्यक है। उन्नति के अवसर उपलब्ध होने पर वही व्यक्ति उनसे लाभान्वित हो सकता है, जो इसके लिये पहले से ही कटिबद्ध हो। इसलिये कहा– "**तमारोहन्ति कवयोविपश्चितः**" ज्ञानी और दूरदर्शी लोग ही इस समय के घोड़े पर छलांग लगा चढ़ने में सफल हो पाते है।

अन्त में कहा– "**तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा**" सभी लोक–लोकान्तर उसके चक्र बन गति कर रहे है। जो व्यक्ति समय के साथ चलेगा वही आगे बढ़ पाएगा।

जो व्यक्ति अवसर को पहचानकर उस पर आरुढ़ हो जाते हैं उनका भाग्योदय होगा ही।

गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने के लिए सर्वत्र उत्साह की लहर

ज्यो–ज्यो स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का समय पास आता जा रहा है। त्यो–त्यो गुरुकुल प्रेमी श्रद्धालु स्नातकों एवं आर्यजनों का उत्साह बढ़ता जा रहा है। पिछले अंक में लिखा गया था महान् दानी, अनन्य वेद भक्त, श्री ठाकुर विक्रम सिंह ने ५ लाख रु. की सहयोग देने की घोषणा की गुरुकुल की होनहार उच्चकोटी के स्नातक आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी ने ३ लाख रु. देकर गए थे। उसके लघु भ्राता आचार्य मंजीत कुमार शास्त्री जी के अश्वसन से श्री जितेन्द्र मोहन जी मेहता की ओर से ५ लाख रु. का सहयोग भिजवाया है। इस प्रकार दिल्ली के इन स्नातकों ने १० लाख रु. का वचन दिया था, परन्तु अब १५ लाख रु. का सहयोग कराने का आवश्वासन दिया है।

!! निवेदक !!

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आश्रम आमसेना

श्रावणी तथा कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर गुरुकुल आश्रम आमसेना में आर्य कुमार सभा की ओर से आयोजित विभिन्न क्रीडा प्रतियोगिता सम्पन्न।

भाषण प्रतियोगिता

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
शास्त्री वर्ग :-	किशन	वेदव्रत	
उ.मध्यमा वर्ग :-	जयदेव	अमन	गोविद
पू.मध्यमा वर्ग :-	सुमन	परमेश्वर	सत्यम

संगीत प्रतियोगिता

मध्यमा वर्ग :-	अर्जुन	गोविन्द	श्रीकान्त
प्रथमा III :-	राकेश	मन्टू आर्य	विकास
	कैलाश		हितेश
प्रथमा II :-	हरिदत्त	विनय	मलय
प्रथमा I :-	दारासिंह	गणेश	विकास

जन्माष्टमी पर्व पर प्रतियोगिता

ऊंची कूद

कनिष्ठ वर्ग :-	हितेश	तुलाराम	
नीलमणि			
ज्येष्ठ वर्ग :-	भूपेन्द्र		

लम्बी कूद

ज्येष्ठ वर्ग :-	महेन्द्र	भूपेन्द्र	

लम्बी दौड़

ज्येष्ठ वर्ग :-	राजू	अरुण	लालू
कनिष्ठ वर्ग :-	हितेश	श्रीकान्त	रोहित

दण्ड प्रतियोगिता

लालु, ५५०	गोविन्द, ४७२	विमल, ३३०

बैठक प्रतियोगिता

खगेश्वर	,नीलमणि, ४७००	अनाम,३६००	परमेश्वर, ३२००

लंगड़ा दौड़

ज्येष्ठ वर्ग :-	अमन	महेन्द्र	कैलाश
	सियाराम	हृषिकेश	विशास
कनिष्ठ वर्ग :-	सुब्रत	नारायण	दीनबन्धु
	पद्मलोचन	किशोर	कोकिल
पंजा लड़ाई :-	उदय	दुश्मन्त	विकास

१०० मीटर दौड़

कनिष्ठ वर्ग :-	रोहित

एक मान्यतम और सुरक्षित आयुर्वेद औषधि

बसंत कुसुमाकर रस

मधुमेह ?

असली स्वर्ण भस्म और अन्य अमूल्य द्रव्यों से बनाया गया बसंत कुसुमाकर रस मधुमेह में होनेवाले शारीरिक दौर्बल्य, थकावट, अनिद्रा, स्मृति की कमी एवं अन्य उपद्रवों को दूर करते हुए मधुमेह पर नियंत्रण करता है ।मधुमेह में मधुमेहान्तक रस भी बहुत उपयोगी है।

निर्माता एवं विक्रेता

गुरुकुल आश्रम आमसेना, नुआपड़ा (ओडिशा)

मेरा रक्षक ईश्वर है

संवत् १९१४ की बात है एक कौपीनधारी साधु हाथ में छोटा सा दण्ड लिये नर्मदा स्रोत की ओर जा रहा है। उत्तरोतर बीहड़ (जंगल) होते जा रहे हैं। इसी बीच एक छोटा सा गांव पडा। जब साधु गांव से निकलने लगा, तो ग्रामवासियों ने उन्हें रोका, पूछा- स्वामी जी कहाँ जा रहे हैं? किधर से आये हैं? स्वामी जी ने कहा मे नर्मदा स्रोत जा रहा हूँ। इस पर ग्रामवासि भयभीत हुए और कहने लगे- महाराज! यह जंगल बहुत भयानक है। आगे अनेक हिंसक पशु कदम कदम पर मिलते हैं। अतः अपका आगे जाना उचित नहीं। कहीं भी आपत्ति आ सकती है। स्वामी जी ने कहा-

ओ३म् सख्ये ते इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम्।। ऋग्. १/११/२

ईश्वर सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् है। वह सबका शासक, किसी से पराजित न होने वाला अजेय है। उनके उपासकों को किसी का भय नहीं होता।

अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिमग्निं भ्रातरं सदमित्सखायं

अग्नेरनीकं बृहतः सपर्यं दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य।। ऋग्. ७०/७/३

यह परमेश्वर ही हमारा माता-पिता, बुन्ध सखा रक्षक और राजा है। वह पूज्य तथा आत्मशक्ति को देने वाला है। उसकी छत्रछाया में ही मैं सदा अपने आपको मानकर चल रहा हूँ। अतः मुझे किसी प्रकार का भय नहीं प्रतीत होता, मैं यात्रा अवश्य करुंगा। यह कहकर चल पड़े। जब ग्रामवासी किसी प्रकार से भी न रोक सके तो स्वामी जी को एक भारी दण्ड देते हुए कहा- महाराज कम से कम इसे साथ लेते जाइये। वहां तो उनका आग्रह देखते हुए दण्ड ले लिया। परन्तु कुछ आगे आकर अपने अटूट ईश्वर विश्वास के धनी साधु ने उसे फेंक दिया। अब थोड़ी सी ही दूर गये थे कि सामने से एक भयंकर भालु (रीछ) गर्जता हुआ आया और जोर से दहाड़ कर दोनों हाथ उठाकर आक्रमण करने के लिए खड़ा हो गया। परन्तु साधु का आखों का तेज पड़ते ही उलटे पांव दौड़ गया। भालु की आवाज सुनकर ग्रामवासी दौड़ते हुए आये, तब तक रीछ भाग गया था। उन्होंने स्वामी जी से फिर वापिस लौटने का आग्रह किया। परन्तु स्वामी जी अपने रास्ते पर बढ़ते ही गये। साधु योगिराज वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उन दिनों योगियों की खोज में घूम रहे थे। ईश्वर के अटूट विश्वास पर केवल दुग्धाहार तथा बिना मार्ग पूछे भ्रमण कर रहे थे।

स्वतन्त्रता को पहचानें

आध्यात्मिक मार्ग को अपना कर चलने वाले साधकों ने आध्यात्मिक मार्ग को यूँ ही नहीं अपनाया होता है। आध्यात्मिक मार्ग को अपनाने के लिए उन्होंने भौतिकता का या कहें भौतिक सुख-साधनों का त्याग किया होता है, घर छोड़ा होता है। व्यापार, नौकरी आदि को छोड़ा होता है, सांसारिक सम्बन्धों को त्यागा होता है। पर्वतों, जंगलों, आश्रमों, गुरुकुलों में निवास करते हुए तपस्या की होती है। उन-उन कार्यों को किया होता है, जो ईश्वर के निकट ले जाने वाले होते हैं।

वर्तमान में भी उनके वैसे ही तप, स्वाध्याय, ध्यान, उपासना, यज्ञ आदि सभी पवित्र कार्य चल रहे हैं और वे भविष्य में भी किये जायेंगे। साधक को स्वयं को भी प्रतीत होता है कि हाँ मैं ठीक दिशा की ओर अग्रसर हो रहा हूँ। परन्तु फिर भी किसी विषय-वस्तु के उपस्थित होने पर राग, द्वेष, ईर्ष्या, असूया, अभिमान, चुगली, निन्दा आदि शत्रु मन में आ जाते हैं, जिनके कारण वर्षों से, महीनों से, दिनों-दिनों से किया हुआ पुरुषार्थ व्यर्थ सा हो जाता है, और फिर उठ खड़ा होने के लिए जहाँ से प्रारम्भ किया, वहाँ से चलना पड़ता है। इस प्रकार उठना और गिरना चलता रहता है, परिमाणत: साधक जिस गति से आगे बढ़ना चाहता है, उस गति से बढ़ नहीं पाता है। ऐसे में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए साधक क्या करे?

साधक जहाँ अन्य विषयों को जानने के लिए पुरुषार्थ करता है, वहाँ स्वयं (आत्मा) को जानने के लिए भी पुरुषार्थ करे। आत्मा को जानने के लिए आत्मा की विशेषताओं को जानना पड़ता है। आत्मा में अनेकों विशेषताएं हैं। उन विशेषताओं में यहाँ एक विशेषता को लेकर विचार किया जा रहा है, और वह विशेषता है आत्मा की स्वतन्त्रता।

आत्मा स्वतन्त्र है अर्थात् कर्म करने या न करने में स्वतन्त्र है। किसी के अनुकूल चलने या न चलने में स्वतन्त्र है आदि-आदि। कोई भी साधक यह जानने में समर्थ होता है कि प्रत्येक आत्मा स्वतन्त्र है और दूसरे की स्वतन्त्रता को मैं छीन नहीं सकता आदि-आदि। ऐसी परिस्थिति में जब साधक साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता हुआ जिस किसी से भी व्यवहार करता है, तो यह मानकर जानकर करता है कि सामने वाला व्यक्ति स्वतन्त्र है और वह अपनी स्वतन्त्रता से उचित भी कर सकता है और अनुचित भी कर सकता है। जब उसे कष्ट, पीड़ा, दु:ख, क्षोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं होते हैं। ऐसी परिस्थिति में साधक संभल कर चलता है, अपने पुरुषार्थ को व्यर्थ होने नहीं देता।

आलस्य और प्रमाद

प्रत्येक कार्य को पूरा करने और सफलता के शिखर तक पहुंचने के लिए निश्चित विधि से, निश्चित मात्रा में, निश्चित समय मर्यादा का अनुसरण करते हुए कार्य को पूरा करने का प्रयास करना जरूरी है।

जरूरी मात्रा में मेहनत न करना और समय पर काम पूरा न करना ये हैं आलस्य के कुछ लक्षण।

प्रमाद का अर्थ है उपेक्षावृत्ति या नैग्लिजेन्स अर्थात् चलेगा, क्या फर्क पड़ता है- ऐसे विचार कर काम को जैसे-तैसे करना या टाल-मटोल करना।

आलसी-प्रमादी व्यक्ति ज्यादातर कामों को अधूरा ही छोड़ देते हैं या बहुत विलंब से पूरा करते हैं जिससे उस कार्य का कोई महत्व नहीं रहता। बार-बार ऐसी निष्क्रियता व्यक्ति के आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को धक्का पहुँचाती है और इन सबसे मन में तनाव उत्पन्न होता है।

इसका उपाय है, समय के मूल्य को समझें। समय को व्यर्थ करना मतलब जीवन को व्यर्थ करना। हम जो क्षमताएं रखते हैं और उनका समय पर सदुपयोग करते हुए जीवन में जो कुछ भी उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं, हमारे अपने आलस्य और प्रमाद उसमें सबसे बड़ा बाधा बनते हैं।

इसके कारण समान क्षमता और अवसर होने पर भी दूसरे हमसे आगे निकल जाते हैं और हम पिछड़ जाते हैं। हमें तो थर्ड क्लास जिन्दगी जीनी पड़ती और वे हमसे ज्यादा सुख-सुविधाएं और पद-सम्मान प्राप्त कर फस्ट क्लास जिन्दगी जीते हैं। यह बात हमें मन में हमेशा चुभती रहती है कि काश, मैंने भी समय रहते उसी की तरह मेहनत की होती, मैं भी उसके जैसे सफल और उन्नत जीवन का आनंद लेता।

जो भी कार्य इस समय हमारे समक्ष उपस्थित है उसे पूरा कर डाले, कल पर टाले नहीं, क्योंकि- 'कल किसने देखा' या 'कल कभी नहीं आता'।

१. जैसे स्कूल से जो भी गृहकार्य, प्रोजेक्ट आदि दिया जाए, उसे निश्चित समय में पूरा कर

लिया तो अतिरिक्त पढ़ाई का समय भी नियोजित कर पायेंगे।

२. 'कार्य पूरा नहीं किया अत: स्कूल में डांट पडेगी' ।इस टेन्शन से भी बचेंगे।

३. बहुत काम इकट्ठा नहीं होगा, अत: परीक्षा से पहले टेन्शन नहीं होगा कि अब परीक्षा की तैयारी करूं या बाकी काम पूरा करूं?

४. खेल–मनोरंजन के लिए भी समय निकाल पायेंगे। सभी कार्यों को संतुलित रूप में कर पायेंगे।

५. यदि काम समय पर पूरा नहीं किया तो अपूर्ण कार्यों का ढेर जमा होता जायेगा। वह न तो चैन से सोने देगा, न और कुछ करने देगा। अन्य कार्यों को करते हुए भी बार–बार मन में ख्याल आएगा कि वो जरूरी काम तो अभी भी बाकी है।इससे एकाग्रता भी भंग होगी और दूसरे काम भी बिगड़ेंगे।

अनेक लोग मेहनत के महत्त्व को नहीं समझते। वे मेहनत को कष्ट मानते हैं। आलसी लोगों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो ऐसी विकृत मानसिकता से पीड़ित होता है कि- हम तो सिर्फ मौज–मस्ती–आनंद करने के लिए ही पैदा हुए हैं। जब तक वे माता–पिता की छत्रछाया में होते हैं, सारी सुख–सुविधाएं भोगते हैं।

इससे उनमें स्वतंत्र रूप में कार्यभार उठाने की क्षमता विकसित ही नहीं हो पाती और स्वयं अपने बल पर ज्यादा कुछ नहीं कर पाते, या करना चाहते भी नहीं और फिर भी पूरा जीवन उसी प्रकार सुख–सुविधाएं अन्यों के आश्रित रहकर भोगने के चक्कर में रहते हैं। ऐसे लोग मानसिक रूप से हताश और पलायनवादी होते हैं। उनका समाज में कोई मान या स्थान नहीं होता।

अत: मेहनत के मूल्य को समझें। मेहनत हमारी क्षमताओं को बढ़ाती है। मेहनती लोग लम्बी उम्र तक स्वस्थ और सक्रिय रह पाते हैं। वृद्धावस्था में भी जहाँ तक हो सके, वे परावलम्बी नहीं बनते।

शारीरिक मेहनत पाचन क्षमता, ताकत (स्टोमिना), सहनशक्ति बढ़ाती है तो मानसिक पुरुषार्थ बौद्धिक क्षमता को विकसित करता है। अत: मेहनत से दूर न भागें और आलस्य रूपी शत्रु को उसकी सहायता से मार दें।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

तेन्दूपत्ता श्रामिको के बच्चों की मेडिकल, इंजीनियरिंग की पढ़ाई मुफ्त

प्रदेश में तेन्दूपत्ता श्रमिक परिवारों के बच्चों की मेडिकल आईआईटी और इंजीनियरिंग कॉलेज की पढ़ाई का पूरा खर्च सरकार वहन करेगी। सीएम डॉ. रमन सिंह ने साइंस कॉलेज में की घोषणा।

¤¤¤¤

योगी बोले, किसी को नहीं छोड़ेगे, हटाए गए दो अफसर

बाबा राघव दास (बीआरडी) मेडिकल कॉलेज में ६४ मरीजों की मौतों के बाद रविवार को सीएम योगी आदित्यनाथ ने अस्पताल का दौरा किया। उनके साथ केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा और यूपी के मेडिकल एजुकेशन मिनिस्टर आशुतोष टंडन भी रहे।

¤¤¤¤

शोपियाँ में मुठभेड़, हिजबुल का चीफ कमांडर ढेर

जम्मू-कश्मीर में सेना ने बड़ी कार्रवाई करते हुए हिज्बुल मुजाहिदील के चीफ कमांडर यासीन इत्तू को मार गिराया है। शोपियाँ के अवनीरा गांव में हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने रविवार को ३ आतंकवादियों को देर कर दिया, जिसमें इत्तू भी शामिल था।

¤¤¤¤

स्वतंत्रता दिवस से पहले कश्मीर में बढ़ी सुरक्षा

कश्मीर घाट में हाल में आतंकवादी घटनाएं बढ़ने के मद्देनजर वहां स्वतंत्रता दिवस से पहल सुरक्षा बिल्कुल कड़ी कर दी गई है। यहां जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी तथा घाटी के अन्य जिलों में स्वतंत्रता दिवस से पहले महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। १५ अगस्त को कार्यक्रमों में बाधा डालने की आतंकियों की कोशिशो को नाकाम किया जा सके।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में 7 अगस्त रक्षा बंधन के अवसर पर गुरुकुल के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती तथा विशिष्ट विद्वान् वानप्रस्थी विशिकेसन जी शास्त्री आचार्य कुञ्जदेव जी आदि ने १६ ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार तथा ७५ ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार करवाया। उसी अवसर पर आशीर्वाद देते हुए।

R.N.I. No. ORIHIN/2000/1876 P.R.No. Kalahandi/03/2016-2018

15 अगस्त एवं कृष्ण जन्माष्टमी के पुण्य अवसर पर कन्या गुरुकुल के कन्याओं का वेदारम्भ एवं उपनयन संस्कार संपन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, आचार्या पुष्पा वेदश्री, कु. कान्ता शास्त्री तथा हेमलता शास्त्री आदि की सानिध्य में संपन्न हुआ।

स्वाधीनता दिवस १५ अगस्त के कुछ दृश्य -

सेवा में,

....

....

....

सदस्यता हेतु एक प्रतिः 10 रु. वार्षिक शुल्कः 100 रु. आजीवनः 1000 रु.

प्रधान सम्पादकः स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से शारदा आफसेट प्रिन्टर्स, ग्राम-डुण्डा, सेजबहार रोड, रायपुर से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया। प्रकाशकः गुरुकुल आश्रम, आमसेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओड़िशा)